

सारवी भाई लालो जी

कथा तेईये ताप दी

पैंतीस अक्षरी



प्रकाशक-

भाई चतर सिंह जीवन सिंह

अमृतसर।

भेद्य : 20-00

साखी भाई लालो जी

कथा तेईये ताप दी

पैंतीस अक्षरी



प्रकाशक:

भाई चतर सिंह जीवन सिंह

अमृतसर



प्रकाशक:-

भा. चतर सिंह जीवन सिंह

बाजार माई सेवां, अमृतसर। (इंडिया)

फोन : (0183) 5011003, 2542346, 2557973

फैक्स : 91-183-5017488

E-mail: csjssales@hotmail.com,
csjspurchase@yahoo.com

Website : csjs.com



Follow us on:

www.facebook.com/csjsamritsar

(Printed in India)

मुद्रक:- जीवन प्रिंटरज, अमृतसर।

साखी भाई लालो जी

कथा तेईये ताप दी

श्री गुरु अमरदास जी तीसरी पातशाही गोइंदवाल चुबारे अन्दर आपणे रंग में बैटे सन। इतने में इक माई ने चीक मारी। गुरु जी ने आखिया खबर लो इह शब्द कैसा हुआ है। गुरु जी का हुक्म मंन के इक सिख गया। जाकर देखा तो बुढी रेंदी है, सिख ने पुछेया की होया ए। पासों लोकां ने कहा इसदा पुत्र तेईये ताप करके शांत हो गया है इतनी बात सुणके मुड़ आया। आ कर गुरु जी पास बेनती कीती जी सच्चे पातशाह इक माई दा बेटा शांत हो गया है, हुक्म होया

क्योंकर शांत होया। सिख ने कहा जी
 सच्चे पातशाह तेईये ताप करके शांत
 होया ए जी। ताँ बचन होया जिचर तीकर
 असीं हाँ तिचर तक कोई पुत्र दा नाम लै
 के दुखी होके न रोवेगी पुत्र माता पिता
 के आगे रहेंगे ते फिर श्री गुरु जी ने तेईये
 नूँ पिंजरे में बालक रूप करके पाया हत्थाँ
 में हथकड़ीयां पैरा दे विच बेड़ीयाँ पाईयां
 पा के कैद कीता कोई दिन बीताया तां
 भाई लालो जी बासीं पिंड तलवंडी गुरु
 जी के दर्शन करने वासते गोइंदवाल जी
 आये कर श्री गुरु जी को मथा टेकया ते
 बैठ गए तो भाई लालो जी दी नज़री
 बालक दा पिन्जरा प्या बालक तढ़पदा है
 ऐसे दुखी देख के गुरु जी अगे अरज

कीती हे सच्चे पातशाह आप दया दे समुंद्र
 हो बड़े कृपालू हो अर आपके हजूर एह
 बालक भुख त्रिखा करके धुप महि तड़प
 रहा ए आपदा बचन होए तो इसनू प्रशाद
 देवीये जी बचन होया भाई लालो एह
 बुरी बला है इसदा ऐथे प्रशाद है नहीं भाई
 लालो कहिया मैंनू हुक्म दो तां मैं इसनू
 प्रशाद पुचावना जी। श्री गुरु अमरदास
 साहिब हुक्म दिता तू जा भाई पुचा दयो
 जब भाई लालो जी अपने नगर को जान
 लगे तो अर्ज कीती जी ऐस बालक नूं
 छोड़ दयो जब भाई लालो जी अपने नगर
 कर तईया को गुरां ने छोड़ दिया तो बचन
 किया भाई इह बुरी बला है। छडणा ते
 नहीं सी भाई लालो ने हत्थ जोड़ कर कहा

जो इह ते बालक है तो बचन होया भाई
 बालक कर न जाणना एह तईया ताप है।
 भाई लालो ती गुरां नूं मथा टेक के गुरां
 तों खुशी लैके अपने नगर नूं तुरया नाल
 तईया नू भी लै गया जां रस्ते दे विच इक
 पिंड दे पास आए तो ओथे इक तलाब पर
 धोबी कपड़े धोंदा सी तां तईया ने भाई
 लालो जी महाराज नू कहा जी मैंनू बड़ी
 भुख लगी ए मैथों ते तुरिया भी नहीं
 जांदा।

भाई लालो जी कहा तूं चल पिंड
 चलने हाँ ओथे तैनू खीर खंड चंगे भोजन
 छकावां गे, ऐथे की खाएंगा। तां तईये ने
 कहा जी महाराज मेरा भोजन एथे है,
 हुक्म दयो तां खा आंदा हां तुसी एथे बैठ

जाओ ।

भाई लालो जी भोले साधू सुभा बैठ
गये तां कहिण लगे जा भाई प्रशाद खा
आ एह वचण सुणके तईया उस धोबी नूं
जा चड़या दो तिन घड़ीयां पिछों उतर
गया तां भाई लालो नू खपर लहू दा भरके
दिखा के पीता सू उपरन्त धोबी दशा
कीता सू एह कौतक देखके भाई लालो
जी बड़े डरे विचार कीती उह भोजन
असां इहनू किथों देणा है । तेईये नू कहा
चल भाई तैनू गुरू के कैदखाने में छड
आइये, तैनू असीं काहनू लिआना सी तू
तां बुरी बला हैं, इह बचन सुणके तईया
डरया अंत कहण लगा, सन्त जी मैनू
ओथे मत खवार करना छड दयो मैं आप

दा अहसान कदी न भुलावांगा ।

भाई लालो जी कहा असी तेनूं तद
छडदे हां जे तू सानू मनेगा तां तईये कहा
जी मेरा धर्म होया जिथे कोई इह साखी
पड़ेगा अर जिस नू मैं चढ़िया होवांगा
उसको सुनानी मैं साखी सुण के उहनू छड
जावांगा । जिस तरां तुसां मैंनू छडिया ए
इस तरां मैं भी छड जावांगा । साखी
सम्पूर्ण होई ।

जथा शक्ति रोट देवणा ॥

पैंतीस अखरी

रागु रामकली महला १ ॥ पैंतीस
अखरी ऊंसर्व प्रकासी ॥ आत्म सुध अकै
अबिनासी इस जीव में भेद न जानो ॥ साध

चोर सब ब्रह्मा पछानो ॥ हसती चीटी
 तृणली आदं ॥ एक अखंडत बसै अनाद ॥
 १ ॥ उ आ इ सा हा ॥ कारण करण
 अकरता कहिये ॥ भान प्रकाश जगत सियों
 लहिऐ ॥ खान खान कहु रूप न रेख निर
 बिकार अदैवत अलेख ॥ गात ग्राम सब
 दस दिसंतर ॥ सति करतार सर्व को अतर ॥
 घन की निआई सदा अखंडत ॥ ज्ञान बोध
 प्रमात्म पंडत ॥ २ ॥ का खा गा घा डा ॥
 चाप ज्ञान करि जाहि बिराजै ॥ छाया दवैत
 सगल उठ भाजै ॥ जाग्रत सुपन सखोपत
 तुरीया ॥ आत्म भूपत की इह पुरिया ॥
 झुनतकार अनहद घन घोर ॥ त्रिकुटी भीतर
 अति छब जोर ॥ णाणत जोगी इया रस
 बाता ॥ सोह शब्द अमी रस माता ॥ ३ ॥

चा छा जा झा जा ॥ टारन भरम अघन थी
 सैना ॥ सतिगुर मुक्ति पदार्थ देना ॥ टाकत
 दुविधा निरमल करणं ॥ डारि सुधा मुख
 अपदाहरणं ॥ टापति दवेत अधेरी मन की ॥
 ४ ॥ टा ठा डा णा ॥ तारन गुरु बिना नहि
 कोई ॥ सुति सिमित मध बात परोई ॥ थान
 अदेत वी जाई परसै ॥ मन बच करम गुरु
 पग दरसै ॥ दारिद रोग मिटै सभ तन का ॥
 गुर करणा कर होवै मुक्ता ॥ धन गुरदेव
 मुक्ति के दाते ॥ नाना नेत बेद जिस गातै
 ॥ ५ ॥ ता था दा धा ना ॥ पारब्रह्म सब
 माहि समाना ॥ सात सिधांत कीया
 बखयाना ॥ फास कटी दवैत गुर पूरे ॥ बाजै
 शबद अनाहद तूरे ॥ बाणा ब्रह्मा साथ भयो
 मेला ॥ भंग दवैत हउ सदा अकेला ॥ मान

अपमान दौऊ जर गए ॥ जोऊ थे सोऊ पुन
 धए ॥ ६ ॥ पा फा बा भा मा ॥ या क्रिया
 कोऊ सोऊ पछानै । अदवैत अखंड आप
 कउ मानै ॥ रवि रहें सबमहि पूरख अलेख ॥
 आदि अपार अनादि अभखं ॥ ड़ाड़ा मिटा
 आत्म दरसाना प्रगटे ज्ञान जोति नह
 भाना ॥ लिवलीन भए आत्म मध ऐसे ॥
 जयों जल जलहि भेद कहू कैसे ॥ वीसदेव
 बिन अवर न कोऊ ॥ नानक उअं सौह
 आत्म सोऊ ॥ ७ ॥ या रा ला वा ड़ा ॥ महले
 दसवें नाल दुर्गा मंतर रलाए लिखया ॥ उअं
 सरोअं हीअ लरीअं सुन्दरी बालप नमः श्री
 गुरु अंगद देव जी गुरुमुखी अक्षर प्रचार
 हैन, गुरु नानक की आज्ञा ए पुनः श्री गुरु
 गोविन्द सिंघ जी की आज्ञा है जो कोई मेरा

सिख पैतीस अखरी दुर्गा मंतर समेत पाठ
 करेगा सौ मुक्ति नूं प्राप्त होवेगा, नौ चन्दे
 अतवार लिखणा पुनया का व्रत रखणा गुर
 पुरब करना तीसरे पहिर हर संगरांद होम
 करना सुध धूप दा ॥ ११८ ॥ इक सौ
 अठारां वार पढ़ना पूरब मुख कर पढ़े तां
 लक्ष्मी प्राप्त होवे । दक्षण मुख कर पढ़े तो
 वैरी नूं जीते ॥ पच्छम मुख कर पढ़े स्त्री
 पुरख बसी होए सयरन मड़ाये पहरे गले या
 सीस में पहरे नौरक्षा होये जो भुजा वधे धन्न
 प्राप्त होए सूरु पहिरे रण जिते स्त्री परिहे
 पुतर पावै ॥ छाया वाले नूं घोल पिलावे
 छाया दूर होवे सरव मनोर्थ गुरू जी पूरा
 करेंगे ॥ १ ॥

पैतीस अखरी सम्पूर्ण होई ॥